Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 16, Issue No. 2, February-2019, ISSN 2230-7540

भारतीय संस्कृति के आख्याता: स्वामी विवेकानंद

Suman Rani*

M.A. (Hindi) NET, B.Ed., Village & post office- Jamal, District Sirsa

सार – ***जब हम भारत के संत-महात्माओं पर दृष्टिपात करते हैं तो हमारा ध्यान संत शिरोमणि विवेकानंद पर जाता है। उनका जन्म*** *12* ***जनवरी, सन् 1863 ई. को कलकत्ता के एक संपन्न कायस्थ घराने में हुआ था। उनके पिताश्री विश्वनाथ नगर के प्रसिद्ध वकील थे। उनकीमाता भुवनेश्वरी एक धर्म-परायण महिला थीं। पुत्र प्राप्ति को वे शिवजी का वरदान समझती थीं। उन्होंने अपने बालक का नाम वीरेश्वर रखा। अन्नप्राशन के समय उसका नाम नरेन्द्रनाथ दत्त रखा गया।***

----------X----------

बालक नरेन्द्र को माता-पिता ने बड़े लाड़-प्यार से पाला था। माता के धार्मिक संस्कारों का प्रभाव नरेन्द्र पर पड़ा और फलस्वरूप साधु-महात्माओं के प्रति श्रद्धा जगी। भक्ति और भजन उसका दैनिक कार्य हो गया। बालक नरेन्द्र भक्ति में ऐसा ध्यान-मग्न हो जाता था, मानो कोई बड़ा योगी समाधिस्थ हो।

नरेन्द्र बचपन से ही होनहार दिखाई देता था। बंगाली की आरंभिक शिक्षा के बाद उसे अंग्रेजी स्कूल में दाखिल कराया गया। उसने सन् 1879 में कलकत्ता के मैट्रोपोलीटन स्कूल में ऐंट्रेस परीक्षा प्राप्त की। अपने स्कूल में केवल नरेन्द्र ही प्रथम श्रेणी में पास हुआ था। कॉलेज में पढ़ते समय नरेन्द्र को व्याख्यान देने में बहुत रुचि थी। कॉलेज में पढ़ते समय उस पर ब्रह्म-समाज का प्रभाव पड़ा और वह कुछ दिन उसका अनुयायी रहा। नित्य ब्रह्म समाज की प्रार्थना में प्रविष्ट होने लगा। नरेन्द्र की आवाज बहुत सुरीली और मधुर थी। संगीत का बड़ा प्रेम था, तबला बजाने में तो उस्ताद था। ब्रह्म समाज की बैठकों में वह बहुधा भजन गाकर लोगों को मुग्ध कर देता था। नरेन्द्रनाथ बड़ा सुंदर और स्वस्थ था। उसका व्यक्तित्व बड़ा मनोहर था। उसका शरीर अच्छा सुगठित और डीलडौल में सुंदर था। वह कुश्ती, बॉक्सिंग, दौड़-घुड़दौड़ और तैयारी सभी में प्रवीण था। नरेन्द्र एक विचारशील, अध्ययनप्रिय और तार्किक बुद्धि का नवयुवक था। ब्रह्म समाज के सिद्धान्त उसकी प्यास न बुझा सका। नरेन्द्र हर्बर्ट स्पेंसर और स्टुअर्ट मिल का प्रेमी था। वह शैली के सर्ववाद और हर्डस्वर्थ एवं हीगेल की आदर्शमूलक दार्शनिकता को मानता था। अंततोगत्वा वह जिज्ञासु बन गया। उसके मन में अनेक प्रश्न उठा करते थे कि सृष्टि क्या है? जीवन क्या है? जीवन के पूर्व हम कहाँ थे? मृत्यु होने पर कहाँ जायेंगे? सृष्टि कोई घटना है या रचना? क्या इसका कोई निर्माता है? परमात्मा क्या है? हैं भी या नहीं। इत्यादि इत्यादि। ब्रह्म समाज में उसकी आध्यात्मिक प्यास न बुझी। निराश होकर जब वह भटक रहा था तो उसे एक महात्मा से साक्षात्कार हुआ।

कलकत्ता के समीप, गंगा के तट पर, दक्षिणेश्वर के मंदिर में एक महात्मा रामकृष्ण परमहंस रहते थे, जिनके प्रति लोगों में बड़ी श्रद्धा थी। हजारों लोग प्रतिदिन उनके दर्शनों को जाते और धर्मोपदेश से लाभ उठाते थे। एक दिन नवयुवक नरेन्द्र को भी वहाँ जाने की सूझी? उसके मन में जिज्ञासा हुई कि देखें कितने लोग पागलों की तरह जिस व्यक्ति के पास जाते हैं, उसमें कौन सी शक्ति और आकर्षण है? स्वामी विवेकानंद ने परमहंस के प्रथम दर्शन का वर्णन इस प्रकार किया है- "वे बिल्कुल साधारण आदमी दिखाई पड़ते थे। उनके रूप में कोई विशेष आकर्षण नहीं था। उनकी बोली सरल और सीधी थी। मैंने मन में ससोचा कि क्या यह संभव है कि वे सिद्ध पुरुष होंगे। मैं उनके पास पहुँचा और सीधे ही प्रश्न किया- महाराज, क्या आप ईश्वर के अस्तित्व में विश्वास रखते हैं? उन्होंने बड़े शांत भाव से कहा- 'हाँ'। फिर मैंने पूछा-क्या आपने उसे देखा है? जवाब मिला- 'हाँ' देखा है और देख रहा हूँ, ठीक वैसे ही जैसे तुम्हें या उस दीवार को? मैंने इस प्रकार के प्रश्न पहले भी कई लोगों से किये थे? परन्तु किसी ने ऐसा निर्भीक एवं स्पष्ट उत्तर नहीं दिया था। मुझे विस्मय हुआ। पुनः मैंने केवल इतना पूछा है- "तो क्या आप किसी दूसरे को भी परमात्मा दिखा सकते हैं? परमहंस ने मुस्कराकर अत्यंत शांत भाव से कहा- "हाँ, यदि कोई देखने वाला हो।" मैं कुछ और न पूछ सका। मुझ पर उनके शब्दों का बड़ा प्रभाव पड़ा।"1

www.ignited.in

इसके बाद युवक नरेन्द्र परमहंस का शिष्य हो गया और परमहंस ने उसका नाम रखा- 'विवेकानंद'। स्वामी विवेकानंद ने रामकृष्ण परमहंस को 'हिन्दू धर्म की गंगा' कहा है जो वैयक्तिक समाधि के कमंडल में बंद थी। विवेकानंद के भगीरथ प्रयत्न ने इस बंद गंगा को विश्व में प्रवाहित किया। रामकृष परमहंस और विवेकानंद का मिलन पूर्वी और पश्चिमी विचारधाराओं का मिलता था, बुद्धि और भौतिकता का, हृदय व आध्यात्मिकता का मिलन था।2

बी.ए. पास करने के पश्चात् नरेन्द्र ने वकालत पढ़ना आरंभ किया। पिता की मृत्यु हो चुकी थी। माता चाहती थी मेरा लड़का वकील हो, अच्छे घर में शादी करे और गृहस्थ का सुख भोगे। इधर परमहंस के सम्पर्क मे आकर नरेन्द्र सांसारिकता से मुँह मोड़ने लगा। उसने वकालत करना भी छोड़ दिया। माता के विवाह सम्बन्धी उतावलेपन को देखकर उसने संन्यास ले लिया।

परमहंस अनुभवी व सिद्ध महात्मा थे। उन्होंने नरेन्द्र को देखकर यह जाँच लिया था कि वह मेरे मिशन की पूर्ति कर सकता है। संन्यास देते समय परमहंस ने नरेन्द्र को कहा था- "बेटा, सारे संसार में लोग मोह रूपी अंधकार में पड़े हुए हैं। उन्हें वेदांत का प्रकाश देकर शांति पहुँचाओ।" संत परमहंस सन् 1886 में स्वर्गवासी हो गये और आध्यात्मिकता की छाप विवेकानंद पर छोड़ गये। गुरु का संदेश घर-घर पहुँचाने से पूर्व स्वामी विवेकानंद की इच्छा हुई कि कुछ समय समस्या और साधना में लगाकर चित्त-शुद्धि और आत्मिक बल दी प्राप्ति की जाए। अतः उन्होंने हिमालय, तिब्बत आदि स्थानों की यात्रा की। वहाँ से लौटकर उन्होंने भारत का भ्रमण किया।

उत्तरी भारत में घूमते हुए स्वामी जी राजस्थान पहुँचे। वहाँ खेतड़ी रियासत के राजा बड़े विद्धान् और जिज्ञासु थे। उन्होंने युवक संन्यासी विवेकानंद की योग्यता को पहचाना। राजस्थान से वे गुजरात और बम्बई में धर्म और वेदांत का संदेश देते हुए दक्षिण भारत की ओर चल दिए। मद्रास उस समय नास्तिकों और जड़वादियों का केन्द्र बना हुआ था। अंग्रेजी विश्वविद्यालय से पढ़े हुए युवक पश्चिमी विचारधारा में डूबे जा रहे थे। स्वामी जी वहाँ कुछ दिन रहे और कितने ही नौजवानों को धर्म-परिवर्तन से रोका। कितने ही लोगों ने उनसे शास्त्रार्थ किया। उनकी विद्धत्ता की ख्याति दूर-दूर तक फैल चुकी थी। मैसूर, कोचीन और मदुरा होते हुए वे रामनद गए। रामनद के महाराजा स्वामीजी के श्रद्धालु भक्त हो गए। मद्रास के क्रिश्चियन कॉलेज के प्रोफेसर मुदलवार स्वामी जी से वाद-विवाद करके बहुत प्रभावित हुए और उनके शिष्य हो गए। जस्टिस सुब्रहमण्यम भी उनके शिष्य बन गए।

देश के भ्रमण से स्वामी ने दुःखी मानवता का करुण-क्रंदन अपने कानों से सुन लिया था। ऋषियों के इस प्राचीन देश की, दयनीय दशा देखकर उनकी आँखों से करुणा के आँसू दलक पड़े। उनके हृदय में भारत के इस दरिद्रनारायण की सेवा का विचार उद्भूत हुआ। इसी समय सितम्ब, 1893 में अमेरिका में एक सर्व धर्म का सम्मेलन आयोजित था। रामनंद के महाराजा ने स्वामी को वहाँ जाने का आग्रह किया। मद्रास में शिष्यों ने भी उन्हें इस सम्मेलन में भाग लेने हेतु अनुनय-विनय किया। धनी-मानी शिष्यों ने धन-राधि एकत्र करके उन्हें अमेरिक भेज दिया।

अमेरिका के शिकागो शहर में बिभिन्न धर्मों एवं सम्प्रदायों के प्रतिनिधि आए थे। भारत से भी ब्रहमसमाज, थियोसोफिकल सोसायटी, जैन धर्म आदि के प्रतिनिधि पहुँचे थे।

11 सितम्बर, 1893 को सम्मेलन प्रारंभ हुआ। विद्वान् लोग अपने-अपने धर्म पर व्याख्यान देने लगे। स्वामी जी का नम्बर बाद में आया। स्वामी जी का इस ढंग की सार्वजनिक सभा में बोलने का प्रथम अवसर था। स्वामी वक्ताओं ने 'लेडीज एण्ड जैन्टलमैन' के सम्बन्धों से श्रोताओं को पुकारा था। स्वामी जी ने अपने संबोधन में 'ब्रदर्स एण्ड सिस्टर्स' कहकर पुकारा। यह संबोधन श्रोताओं को नया प्रतीत हुआ। उनके व्याख्यान में भारतीय आत्मा की झलक थी। विवेकानंद ने हिन्दू-धर्म की उदारता, सहिष्णुता, आत्मीयता की वह गंगा बहाई कि सुनने वाले मंत्र-मुग्ध हो गए। उस पहले व्याख्यान में ही स्वामीजी ने सभी प्रतिनिधियों को पछाड़ दिया। हिन्दू-धर्म को कूप-मंडूक समझने वाले विदेशी स्वामी जी की हिन्दू धर्म सम्बन्धी व्याख्यान को सुनकर दंग रह गए। उनकी वाणी में जादू था। उनका प्रत्येक शब्द हृदय से निकला हुआ था। इस व्याख्यान से स्वामीजी की कीर्ति सर्वत्र फैल गई। उनके व्याख्यान पर टिप्पणी लिखते हुए 'दी न्यूयार्क हैराल्ड' ने लिखा था- "सर्व धर्म सम्मेलन में सबसे महान् व्यक्तित्व विवेकानंद का है। उनकी वाणी में ओजस्विता है।"3 सम्मेलन के सभापति ने कहा- "जिस धर्म और देश के प्रतिनिधि स्वामी विवेकानंद हैं, वह देश सचमुच धर्मों को जन्म देने वाला है।"4 स्वामी जी ने अपने व्याख्यान में कहा- "हिन्दू धर्म तो उस विशाल, समुद्र के समान है, जिसमें अनेक प्रकार की धर्म-सरिताएँ आकर मिल जाती हैं।... हिन्दू धर्म सनातन है, शाश्वत है। हमारे धर्म में उदारता और सहिष्णुता है।"5

स्वामी जी के व्याख्यान का अमेरिका के लोगों पर बहुत प्रभाव पड़ा। स्वामीजी यहाँ दो साल तक ठहरे और हिन्दू धर्म का प्रचार-प्रसार करते रहे। सन् 1885 में स्वामीजी इंगलैण्ड लाये। वहाँ जाकर स्वामी जी ने अनेक व्याख्यान दिए।

www.ignited.in

आपकी दिव्य वाणी का प्रभाव अंग्रेजो पर भी पड़ा। कुछ दिनों में ही स्वामीजी के अनेक शिष्य बन गये, जिनमें कुमारी 'नोबल' भी एक थी। बाद में हिन्दू धर्म ग्रहण करके 'भगिनी निवेदिता' के नाम से प्रसिद्ध हुई। स्वामी जी ने अपने भाषणों, वार्तालापों, लेखों, वाद-विवादों आदि से हिन्दू-धर्म और आध्यात्म भावना को सारे यूरोप में फैला दिया। पश्चिमी दुनिया को ज्ञात हुआ कि विज्ञान और भौतिकता में यूरोप चाहे कितना ही बढ़ जाए, पर आध्यात्म और ब्रह्म ज्ञान का मैदान भारत ही है।

16 सितम्बर, 1896 को स्वामी जी अनेक अंग्रेज़ शिष्यों के साथ भारत में आए। ... स्वामी जी जब कोलम्बो के बंदरगाह पर उतरे तो लोगों ने उनका हार्दिक स्वागत किया। स्वामीजी के व्याख्यानों की सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि उनका धार्मिक उपदेश हमेशा व्यावहारिक रहा। स्वामी जी ने वेदांत की दार्शनिक विचारधारा को सामाजिक उपयोगिता का चोला पहनाया। अज्ञानता, दुर्बलता, दासता, विदेशी अनुकरण, अशिक्षा, अंध-विश्वास आदि के विरुद्ध वे खड़े हो गए। हीनता की भावना को दूर करने के लिए उन्होंने आत्मवाद का प्रचार किया।6

भारतवासियों को संदेश देते हुए स्वामी जी ने कहा कि "अब ज्यादा रोने-धाने का समय नहीं है। इस समय कुछ बल-पौरुष की आवश्यकता है। मैं ब्रह्म हूँ, इस ज्ञान की सहायता से खुद अपने पैरों पर खड़ा होने की कोशिश करो।"7

स्वामी जी सच्चे देशभक्त थे। हिन्दू जाति को संगठित और शक्तिशाली बनाने का उपदेश दिया। वे देश के नौजवानों को बलवान देखना चाहते थे। उन्होंने अपने व्याख्यान में कहा- "मेरे नौजवान दोस्तो! बलवान बनो!... गीता का उपदेश कायरों को नहीं दिया गया था, बल्कि अर्जुन जैसे वीर, पराक्रमी और साहसी क्षत्रिय को दिया गया था।" स्वामीजी ने भारतवासियों को आत्मबल, आत्म-गौरव, जातीयता, कर्त्तव्यपरायणता और वीरता का उपदेश दिया।

स्वामी जी ने अपने एक व्याख्यान में कहा-भाइयों, अच्छी तरह समझ लो कि सीता, सावित्री और दमयंती तुम्हारी आदर्श देवियाँ हैं। वीर पुरुषो! मर्द बनो और ललकार कर कहो- "मैं भारतीय हूँ। भारत मेरा प्राण है, मेरा जीवन है। प्रत्येक भारतीय मेरा भाई है। अपढ़, भारतीय, निर्धन भारतीय, ऊँची जाति का भारतीय, नीच जाति का भारतीय-सब मेरे भारतीय हूँ।8

स्वामी जी अंग्रेजी शिक्षा के कट्टर विरोधी थे। वे शिक्षा का उद्देश्य चरित्र-निर्माण बताते थे। उनका कहना था कि जिस शिक्षा से मनुष्य के चरित्र में दृढ़ता, मनोबल, आचरण की शुद्धि आदि का समावेश न हो, उसका क्या फायदा? वस्तुतः स्वामीजी धर्म-शास्त्र, दर्शनशास्त्र, साहित्य, पुराण, उपनिषद् आदि के पूर्ण पंडित थे। वे संस्कृत, जर्मन, हिन्दू, ग्रीक, फ्रेंच आदि बिभिन्न भाषाओं के भी जाता थे।

4 जुलाई, 1902 में स्वामी जी दिवंगत हो गये। ... केवल 39 वर्ष की अल्प-आयु में स्वामी जी ने इतना कर डाला कि आश्चर्य-चकित होना पड़ता है। भारतीय संस्कृति के इस अमर पुत्र, राष्ट्र के ज्योति-स्तंभ एवं संसार के धर्मगुरु के निधन पर मानवता को जबरदस्त धक्का पहुँचा। वास्तव में, स्वामी जी अमर हैं, उनका कार्य अमर है, उनका संदेश अमर है। अंत में कमलेश रानी अग्रवाल के शब्दों में कहा जा सकता है-

सत्य मार्ग दर्शाने वाले, स्वामी को शत् बार नमन्।

सोता देश जगाने वाले, स्वामी को शत् बार नमन्।।

संदर्भ

1. संसार चंद, चरित्र चन्द्रिका, पृ. 92
2. वही, पृ. 92
3. वही, पृ. 96
4. वही, पृ. 96
5. वही, पृ. 97
6. वही, पृ. 100
7. वही, पृ. 101
8. वही, पृ. 104

Corresponding Author

Suman Rani*

M.A. (Hindi) NET, B.Ed., Village & post office-Jamal, District Sirsa

www.ignited.in